Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भारत का भूगोल

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग-2

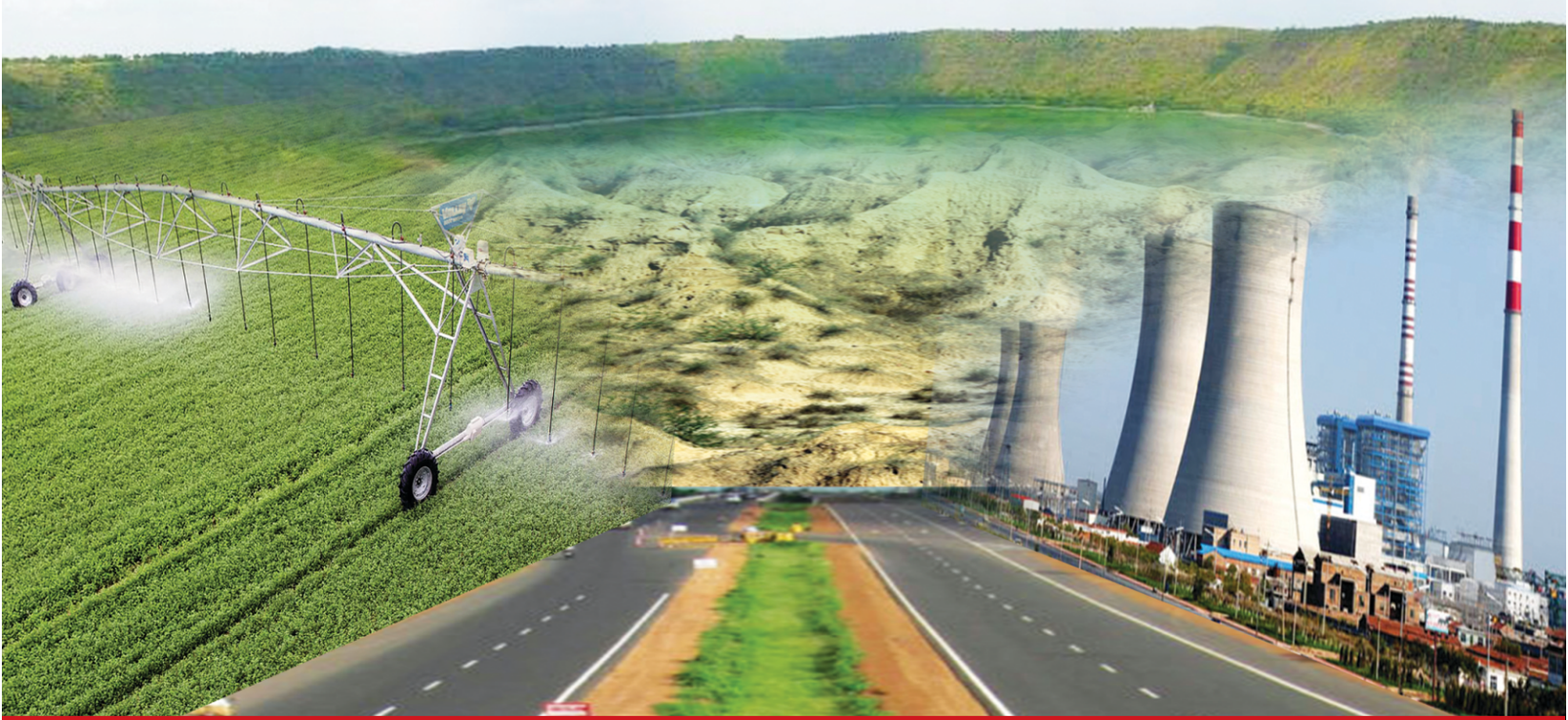

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UPPM09

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भारत का भूगोल

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–2

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPPCS DLP विषय सूची (Contents)

9.	**खनिज संसाधन एवं उद्योग**	**5-41**
	9.1 खनिज	5
	9.2 उद्योग	14
	9.3 भारत के औद्योगिक प्रदेश	32
	9.4 उत्तर प्रदेश में खनिज संसाधन एवं उद्योग	36
10.	**भारत में परिवहन**	**42-59**
	10.1 सड़क परिवहन	42
	10.2 रेल परिवहन	48
	10.3 वायु परिवहन	52
	10.4 जल-मार्ग परिवहन	53
	10.5 प्रमुख बंदरगाह	55
11.	**ऊर्जा**	**60-88**
	11.1 ऊर्जा के स्रोत	60
	11.2 ऊर्जा संसाधन	63
	11.3 ऊर्जा से संबंधित प्रमुख योजनाएँ	75
	11.4 उत्तर प्रदेश में ऊर्जा परिदृश्य	83
12.	**जनांकिकीय व्यवस्था एवं नगरीकरण**	**89-121**
	12.1 भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ	89
	12.2 बढ़ती जनसंख्या को रोकने हेतु सरकारी नीति	91
	12.3 भारत की जनगणना, 2011	93
	12.4 भारत में नगरीकरण	103
	12.5 जनसंख्या से संबंधित शब्दावलियाँ	112
13.	**भारत की भाषाएँ, प्रजातियाँ एवं जनजातियाँ**	**122-129**
14.	**भारत में भूमि सुधार**	**130-143**
	14.1 भारत में भूमि सुधारों की आवश्यकता एवं महत्त्व	130
	14.2 स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में भूमि सुधार	131

14.3 भूमि सुधार कार्यक्रमों की समीक्षा 135
14.4 भूमि सुधार कार्यक्रमों की सफलता के लिये सुझाव 136
14.5 विभिन्न योजनाओं के दौरान भू-सुधार 136
14.6 विभिन्न राज्यों में भू-सुधार नीति 137
14.7 भूमि सुधार से संबंधित संवैधानिक संशोधन 139
15. भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाएँ **144-169**
15.1 भौगोलिक अवस्थिति 144
16. भारत में सामुद्रिक संसाधन एवं उनकी संभाव्यता **170-180**
16.1 सागरीय संसाधनों का वर्गीकरण 170
16.2 भारत में समुद्री संसाधन: अनुसंधान एवं संभाव्यता 176

अध्याय
9

खनिज संसाधन एवं उद्योग
(Mineral Resources and Industry)

9.1 खनिज *(Mineral)*

भूगर्भ से खोदकर निकाले जाने वाले भौतिक पदार्थों को खनिज कहा जाता है। खनिज वे प्राकृतिक रासायनिक तत्त्व या यौगिक हैं, जिनका निर्माण अजैव क्रियाओं द्वारा होता है। जिन स्थानों से खनिज निकाले जाते हैं, उन्हें खान कहा जाता है। संरचना के आधार पर खनिजों को निम्नलिखित प्रकार से बाँटा जाता है–

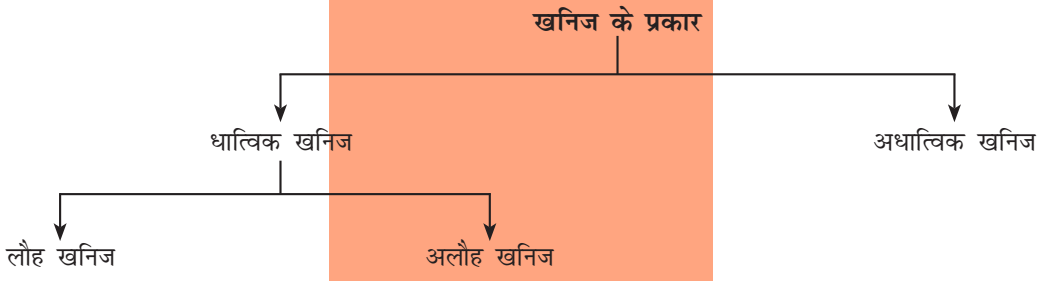

खनिज		
धात्विक		अधात्विक
लौह	अलौह	
लौह अयस्क	तांबा	हीरा
मैंगनीज़	एल्युमीनियम	संगमरमर
क्रोमियम	टिन	चूना पत्थर
निकेल	सीसा	ग्रेनाइट
कोबाल्ट	चांदी	अभ्रक
टंगस्टन	प्लेटिनम	जिप्सम
	ज़िंक	गंधक
		पाइराइट
		एस्बेस्टस

धात्विक खनिज *(Metallic Minerals)*

- ऐसे खनिज जिन्हें गलाने से धातु प्राप्त होती है, धात्विक खनिज कहलाते हैं।
- ये खनिज अयस्क के रूप में प्राप्त होते हैं। भारत में धारवाड़ शैल तंत्र धात्विक खनिजों का प्रमुख स्रोत है। इसके पश्चात् कुडप्पा शैल तंत्र का भी धात्विक खनिज की दृष्टि से महत्त्व है।
- धातु लचीली होती है और उन्हें पीटकर किसी भी रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

लौह खनिज

इसके अंतर्गत लौह अयस्क, मैंगनीज़, टंगस्टन, क्रोमियम, निकिल, बोरॉन, टाइटेनियम, वेनेडियम, मोलिब्डेनम, कोबाल्ट आदि को शामिल किया जाता है।

उत्तर प्रदेश में औद्योगिक पार्क	
ट्रोनिका सिटी	कानपुर, गाजियाबाद
चर्म प्रौद्योगिकी पार्क	उन्नाव
एग्रो प्रोसेसिंग जोन	हापुड़, लखनऊ, वाराणसी, सहारनपुर
प्लास्टिक सिटी	कानपुर देहात, औरैया
इलेक्ट्रॉनिक्स सिटी	नोएडा, आगरा
निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क	आगरा
एपैरल (टेक्स्टाइल) एवं हौजरी पार्क	कानपुर

- उत्तर प्रदेश के खनिज एवं उद्योग की विस्तृत जानकारी के लिये उत्तर प्रदेश राज्य विशेष बुकलेट का अध्याय 10 एवं 11 देखें।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- उत्तर प्रदेश में सीमेंट कारखाने स्थित हैं- कजरहट एवं चुनार (मिर्जापुर), चुर्क एवं डल्ला (सोनभद्र), रायबरेली, गौरीगंज एवं जगदीशपुर (अमेठी); कासगंज झांसी, टांडा (फैजाबाद), सिकंदराबाद (बुलंदशहर) तथा अलीगढ़।
- कोयला खनन उद्योग- सिंगरौली (सोनभद्र)
- ग्रेनाइट खनन उद्योग- ललितपुर
- चीन मिट्टी (पाटरी) उद्योग- खुर्जा (बुलंदशहर), मिर्जापुर, सोनभद्र, चंदौली, गाजियाबाद, फिरोज़ाबाद।
- पीतल बर्तन कलई उद्योग- वाराणसी, मिर्जापुर, फर्रुखाबाद, हाथरस, अतरौली, मुरादाबाद, शामली एवं हापुड़।
- अहरौरा (मिर्जापुर) तथा कुछ अन्य स्थानों से प्राप्त कांच बालू का व्यावसायिक उपयोग किया जा रहा है।
- सोनभद्र में एल्यूमीनियम उद्योग का विकास हुआ है।
- भारत का सीमेंट उत्पादन में स्थान (2015) दूसरा रहा, जबकि चीन प्रथम तथा अमेरिका तीसरा सबसे बड़ा सीमेंट उत्पादक रहा।
- कोरापुट (ओडिशा) एक प्रमुख बॉक्साइट भंडार क्षेत्र है। यह एल्यूमीनियम उत्पादन के लिये प्रसिद्ध है।
- भारत में बेलाडीला (छत्तीसगढ़) की खान सबसे बड़ी मशीनीकृत खान है।
- देश की प्रमुख एल्यूमीनियम उत्पादक कंपनियाँ हैं- बाल्को-कोरबा (छत्तीसगढ़), हिंडाल्को- रेनूकूट (उत्तर प्रदेश), इंडियन एल्यूमीनियम कंपनी- हीराकुंड (ओडिशा) एवं नाल्को- कोरापुट (ओडिशा)।
- उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में यूरेनियम भंडार पाया गया है।
- धारवाड़ शैल समूह भारत में धात्विक खनिजों का प्रमुख स्रोत है। जबकि विंध्यन शैल समूह अधात्विक खनिजों के लिये प्रसिद्ध है।
- डल्ली राजहरा छत्तीसगढ़ का प्रमुख लौह अयस्क केंद्र है।
- चित्रदुर्ग कर्नाटक में है जो मैंगनीज की उपलब्धता हेतु प्रसिद्ध है।
- मकुम असम में एक प्रमुख कोयला भंडार क्षेत्र है।
- मथुरा में उत्तर प्रदेश का प्रमुख तेल शोधक कारखाना है जो इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन द्वारा संचालित है। इसकी स्थापना 1982 में हुई थी।
- जामनगर तेल शोधन केंद्र गुजरात में अवस्थित है जो भारत का सबसे बड़ा पेट्रो रसायन उत्पादन केंद्र है तथा यह रिलायंस इंडस्ट्रीज द्वारा संचालित है।
- मोनाजाइट खनिज एक महत्त्वपूर्ण नाभिकीय ऊर्जा स्रोत है, जो केरल के तटीय क्षेत्रों में बहुतायत में पाया जाता है।
- भदोही उत्तर प्रदेश का एक औद्योगिक केंद्र है जो कारपेट (कालीन) उद्योग के लिये प्रसिद्ध है।
- काकीनारा (पश्चिम बंगाल) जूट उद्योग के लिये विरुधनगर (तमिलनाडु) सूती वस्त्र उद्योग के लिये तथा चन्नापटना (कर्नाटक) रेशम उद्योग के लिये प्रसिद्ध है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

UPPCS (Pre) 2017

सूची I (एल्यूमीनियम कंपनी)	सूची-II (स्थिति)
A. बाल्को	1. हीराकुंड
B. हिंडाल्को	2. कोरबा
C. इंडियन एल्यूमीनियम कंपनी	3. कोरापुट
D. नाल्को	4. रेनूकूट

कूट:

	A	B	C	D
(a)	3	1	4	2
(b)	2	4	1	3
(c)	3	4	1	2
(d)	2	1	4	3

2. निम्नलिखित में से कौन सा शैल समूह भारत में धात्विक खनिजों का प्रमुख स्रोत है?

UP (RO/ARO) Pre 2017

(a) टार्शियरी समूह (b) विंध्यन समूह
(c) गोंडवाना समूह (d) धारवाड़ समूह

3. उत्तर प्रदेश के किस जिले में यूरेनियम पाया जाता है?

UPPCS (Pre) 2016

(a) झांसी में (b) मिर्जापुर में
(c) ललितपुर में (d) हमीरपुर में

4. सूची-I को सूची- II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

UPPCS (Pre) 2016

सूची I (केंद्र)	सूची-II (खनिज)
A. मकुम	1. लौह अयस्क
B. डल्ली राजहरा	2. कोयला
C. कोरापुट	3. मैंगनीज
D. चित्रदुर्ग	4. बॉक्साइट

कूट:

	A	B	C	D
(a)	3	2	1	4
(b)	2	1	4	3
(c)	4	3	2	1
(d)	1	2	3	4

5. निम्नलिखित में से कौन एक सही सुमेलित नहीं है?

UPPCS (Mains) 2015

(a) कोलकाता-हुगली क्षेत्र : टीटागढ़
(b) छोटा नागपुर क्षेत्र : शिवकासी
(c) मुंबई-पुणे क्षेत्र : अंबरनाथ
(d) अहमदाबाद-बड़ौदा क्षेत्र : भरूच

6. निम्नलिखित में से किस उद्योग की अवस्थिति के लिये कच्चे माल की उपलब्धि मूल कारक नहीं है?

UPPCS (Pre) 2015

(a) लोहा तथा इस्पात (b) शर्करा
(c) इलेक्ट्रॉनिक्स (d) सीमेंट

7. उत्तर प्रदेश में यूरेनियम पाए जाने वाला जिला है-

UPPCS (Lower) Mains 2015

(a) झांसी (b) चंदौली
(c) हमीरपुर (d) ललितपुर

8. उत्तर प्रदेश में तेल शोधक कारखाना स्थित है

UPPCS (Lower) Mains 2015

(a) मुरादाबाद में (b) मिर्जापुर में
(c) कानपुर में (d) मथुरा में

9. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित नहीं है?

UP (RO/ARO) Mains 2014

(उद्योग)	(केंद्र)
(a) सीमेंट	– पोरबंदर
(b) पेट्रो रसायन	– नागथेन
(c) चीनी	– सिलवासा
(d) लोहा एवं इस्पात	– राउरकेला

10. भारत में निम्नलिखित औद्योगिक प्रदेशों में से किसमें शिवकाशी केंद्र स्थित है?

UP (RO/ARO) Mains2014

(a) छोटा नागपुर प्रदेश
(b) अहमदाबाद- वड़ोदरा प्रदेश
(c) मदुरई- कोयंबटूर-बंगलूरू प्रदेश
(d) कोलकाता - हुगली प्रदेश

11. सूची-I को सूची- II से सुमेलित कीजिये और सूचिया. के नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

UPPCS (Pre) 2013

सूची I (उद्योग)	सूची-II (स्थान)
A. कागज	1. अंबाला मुकुल
B. सीमेंट	2. भिलाई
C. लौह और इस्पात	3. टीटागढ़
D. खनिज तेल शोधन शाला	4. लखेरी

कूट:

	A	B	C	D
(a)	2	4	3	1
(b)	3	4	2	1
(c)	4	2	1	3
(d)	2	3	1	4

12. सूची-I को सूची- II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

UPPCS (Pre) 2013

सूची I (उद्योग)	**सूची-II (केंद्र)**
A. एल्युमिनियम	1. मालंजखंड
B. तांबा	2. टुंडू
C. जस्ता	3. जे.के. नगर
D. जूट	4. भाटपाड़ा

कूट:

	A	B	C	D
(a)	3	1	4	2
(b)	3	1	2	4
(c)	1	4	2	3
(d)	1	2	3	4

13. सूची-I को सूची- II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

UPPCS (Lower) Pre 2013

सूची I (केंद्र)	**सूची-II (उद्योग)**
A. काकीनारा	1. कारपेट
B. विरुधनगर	2. जूट
C. चन्नापटना	3. सूती वस्त्र
D. भदोही	4. रेशम

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	2	3	4	1
(d)	3	2	1	4

14. विश्व स्तर पर सीमेंट उत्पादन (2010) में भारत का स्थान है- **UP(RO/ARO) Mains 2013**

(a) पहला (b) दूसरा
(c) तीसरा (d) चौथा

15. निम्नलिखित में से कौन एक सही सुमेलित नहीं है? **UP(RO/ARO) Mains 2013**

(a) लौह अयस्क - कुद्रेमुख
(b) मैंगनीज - कोरापुट
(c) तांबा - खेत्री
(d) कोयला - सिंगरेनी

16. उत्तर प्रदेश में चमड़ा उद्योग के प्रमुख केंद्र हैं- **UP(RO/ARO) 2013**

(a) आगरा, कानपुर (b) आगरा, इलाहाबाद
(c) कानपुर, इलाहाबाद (d) कानपुर, मेरठ

17. निम्नलिखित में से कौन-सा खनिज केरल में बहुतायत से मिलता है? **UP(RO/ARO) Pre 2013**

(a) टिन (b) मैंगनीज
(c) अभ्रक (d) मोनाजाइट

18. 1818 ई. में पहला सूती वस्त्र कारखाना निम्न क्षेत्र में शुरू हुआ- **UP(RO/AR) Pre 2013**

(a) पश्चिम बंगाल में फोर्ट ग्लास्टर में
(b) महाराष्ट्र के मुंबई में
(c) गुजरात के अहमदाबाद में
(d) उत्तर प्रदेश के कानपुर में

19. पेट्रो रसायन के उत्पादन का सबसे बड़ा केंद्र कहाँ पर स्थित है? **UP (RO/ARO) Pre 2013**

(a) जामनगर (b) अंकलेश्वर
(c) नूनमारी (d) ट्रॉम्बे

20. राउरकेला इस्पात संयंत्र की स्थापना हुई थी **UPPCS (Mains) 2012**

(a) यूनाइटेड किंगडम के सहयोग से
(b) रूस के सहयोग से
(c) संयुक्त राज्य अमेरिका के सहयोग से
(d) जर्मनी के सहयोग से

21. भारत में निम्न शैल तंत्रों में से किसमें लौह अयस्क के प्रमुख जमाव पाए जाते हैं? **UPPCS (Mains) 2012**

(a) गोंडवाना तंत्र (b) कुडप्पा तंत्र
(c) धारवाड़ तंत्र (d) विंध्यन तंत्र

22. सूची-I को सूची- II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

UPPCS (Pre) 2012

सूची I (खनन क्षेत्र)	**सूची-II (खनिज)**
A. गुरूमहिसानी	1. सीसा
B. तलचर	2. यूरेनियम
C. जादूगुड़ा	3. लौह अयस्क
D. जावर	4. कोयला

कूट:

	A	B	C	D
(a)	3	4	2	1
(b)	3	2	1	4
(c)	2	4	3	1
(d)	1	2	3	4

23. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य भारत में मैंगनीज का सर्वाधिक उत्पादन करता है? **UPPSC (Pre) 2012**
(a) महाराष्ट्र (b) मध्य प्रदेश
(c) कर्नाटक (d) ओडिशा

24. बैलाडिला खान किस खनिज से संबंधित है?
(a) लौह अयस्क (b) कोयला
(c) मैंगनीज अयस्क (d) अभ्रक

25. निम्न में से कौन भारत में सबसे बड़ी मशीनीकृत खान है?
(a) रत्नागिरि खान (b) जयपुर खान
(c) सुंदरगढ़ खान (d) बेलाडीला खान

26. राजस्थान का लगभग एकाधिकार है-
(a) तांबा में (b) अभ्रक में
(c) जस्ता में (d) डोलोमाइट मे

27. निम्नलिखित में से किस राज्य में तांबा का सबसे अधिक भंडार है?
(a) बिहार (b) झारखंड
(c) कर्नाटक (d) राजस्थान

28. बॉक्साइट किसका अयस्क है?
(a) सीसा का (b) एल्यूमीनियम का
(c) जस्ता का (d) तांबा का

29. भारत में टिन का अग्रणी उत्पादक है-
(a) आंध्र प्रदेश (b) छत्तीसगढ़ का
(c) झारखंड (d) ओडिशा

30. भारत विश्व में अग्रणी उत्पादक है-
(a) हीरों का (b) लौह अयस्क का
(c) अभ्रक का (d) टंगस्टन का

31. निम्नलिखित में से किन जिलों में भारत की सबसे बड़ी अभ्रक मेखला पाई जाती है?
(a) बालाघाट और छिंदवाड़ा
(b) उदयपुर, अजमेर और अलवर
(c) हजारीबाग, गया और मुंगेर
(d) सलेम और धरमपुरी

32. सूची-I को सूची- II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

सूची I (खनिज)	**सूची-II (शीर्ष उत्पादक राज्य)**
A. लौह अयस्क	1. ओडिशा
B. तांबा	2. कर्नाटक
C. सोना	3. राजस्थान
D. अभ्रक	4. आंध्र प्रदेश

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	3	2	4
(b)	4	2	3	1
(c)	1	4	2	3
(d)	3	1	4	2

उत्तरमाला

1. (b)	2. (d)	3. (c)	4. (b)	5. (b)	6. (c)	7. (d)	8. (d)	9. (c)	10. (c)
11. (b)	12. (b)	13. (c)	14. (b)	15. (b)	16. (a)	17. (d)	18. (a)	19. (a)	20. (d)
21. (c)	22. (a)	23. (b)	24. (a)	25. (d)	26. (a)	27. (d)	28. (b)	29. (b)	30. (c)
31. (c)	32. (a)								

अभ्यास प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. भारत में अति-विकेंद्रीकृत सूती कपड़ा उद्योग की स्थापना में कारकों का विश्लेषण कीजिये।
2. भारत में जूट उद्योग पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।
3. भारत में औद्योगिक प्रदेशों का वर्णन कीजिये।

अध्याय
10

भारत में परिवहन (Transport in India)

किसी देश की सतत् आर्थिक संवृद्धि में बेहतर ढंग से संबद्ध परिवहन प्रणाली अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के निरंतर विकास में सुचारु परिवहन प्रणाली का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान में भारत की परिवहन प्रणाली में यातायात के विभिन्न माध्यमों को शामिल किया गया है, इनमें प्रमुख हैं- सड़क परिवहन, रेल परिवहन, वायु परिवहन, तटीय नौ संचालन इत्यादि। पिछले कुछ वर्षों में परिवहन प्रणाली के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ इसकी क्षमता भी बढ़ी है। परिवहन देश की आधारिक संरचना का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, क्योंकि यह कृषि व औद्योगिक विकास के साथ सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव डालता है।

10.1 सड़क परिवहन *(Road Transport)*

देश के आर्थिक विकास के लिये सड़क परिवहन महत्त्वपूर्ण अवसंरचना है। सड़क परिवहन ने भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह विकास की गति, संरचना व पद्धति को प्रभावित करता है।

भारत में 3.3 मिलियन किमी. सड़क नेटवर्क है जो विश्व में दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है। परिवहन के क्षेत्र में सड़कों का स्थान अग्रणी है क्योंकि वर्तमान अनुमान के अनुसार भारत में सड़क अवसंरचना का उपयोग 65% माल ढुलाई तथा 87% यात्री परिवहन में होता है।

- सड़कों के निर्माण से ग्रामीण विकास की प्रक्रिया तीव्र हुई है। कृषकों का संबंध बाज़ार से बढ़ा है, जिससे उत्पादन आधिक्य की घरेलू बाज़ार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार तक पहुँच सुनिश्चित हुई है। इससे कृषकों में व्यावसायिक प्रवृत्ति का विकास होने के कारण उनकी लाभदेयता बढ़ाने में भी सफलता मिली है।
- भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने साधनों की गतिशीलता में वृद्धि की है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण से औद्योगिक मांग की वस्तुओं के परिवहन में कुशलता बढ़ी है।
- परिवहन के विकास के कारण लोगों में गतिशीलता बढ़ी है।
- वर्तमान में भारत में कुल सड़कों की लंबाई 56.17 लाख किमी. है, जो कि विश्व का दूसरा सबसे बड़ा रोड नेटवर्क है।
- भारत में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिये ज़िम्मेदार होता है।
- भारत में सड़कों के निम्नलिखित प्रकार हैं-

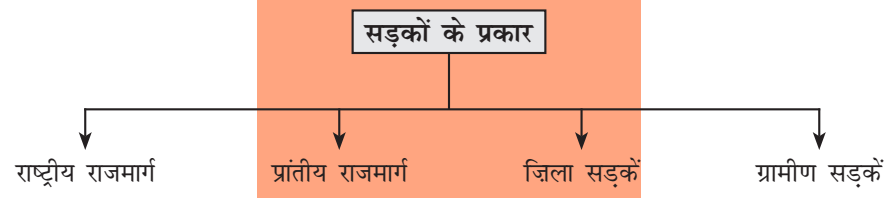

राष्ट्रीय राजमार्ग *(National highway)*

- भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 1,15,530 किमी. है।
- राष्ट्रीय राजमार्ग, कुल सड़क मार्ग का मात्र 2.06% है।
- वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग-44 भारत का सबसे लंबा राजमार्ग है, जो श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर) से प्रारंभ होकर कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में समाप्त होता है।

अध्याय
11

ऊर्जा
(Energy)

किसी राष्ट्र की विकास प्रक्रिया में ऊर्जा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। कृषि व संबंधित क्षेत्रों के साथ ऊर्जा आर्थिक विकास और जीवन स्तर बेहतर बनाने के लिये एक आवश्यक साधन है। ऊर्जा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिये ऊर्जा के पारंपरिक स्रोत के विकास तथा गैर-पारंपरिक स्रोतों को प्रोत्साहित करने की ज़िम्मेदारी सरकार की है।

11.1 ऊर्जा के स्रोत *(Sources of Energy)*

ऊर्जा के परंपरागत स्रोत *(Conventional source of energy)*

ऊर्जा उत्पादन के विविध स्रोत हैं, जिन्हें परंपरागत व गैर-परंपरागत स्रोतों में वर्गीकृत किया जाता है। परंपरागत ऊर्जा स्रोत से तात्पर्य वैसे स्रोतों से है, जो लंबे समय से उपयोग में लाए जा रहे हैं। जैविक अवशेष व जीवाश्म ईंधन परंपरागत ऊर्जा के दो प्रमुख स्रोत हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 50% से अधिक ऊर्जा इन्हीं ईंधनों से प्राप्त होती है। जीवाश्म ईंधन के अंतर्गत कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है।

ऊर्जा के परंपरागत स्रोत

खनिज तेल एवं प्राकृतिक गैस

लाभ	हानि
● आसानी से परिवहनीय ● पैट्रो-रसायन उद्योग का आधार ● कोयले से अधिक स्वच्छ ● तुलनात्मक रूप से किफायती	● तेल अधिप्लावन एवं गैस रिसाव के कारण आर्थिक एवं पर्यावरणीय हानि ● निर्मुक्त प्रदूषकों के कारण अम्ल वर्षा ● नए ईंधन का अन्वेषण आसान नहीं

जैविक अवशेष

लाभ	हानि
● सुप्राप्य ● बहुसंख्यक लोगों को ऊर्जा प्रदान करता है।	● संग्रहण में अधिक समय उपयोग ● प्रदूषण फैलाने वाला ● हरित गृह प्रभाव में वृद्धि करता है ● निर्वनीकरण

कोयला

लाभ	हानि
● विस्तृत रूप से उपलब्ध ● विद्युत रूपांतरण के लिये उपयुक्त	● प्रदूषण का स्रोत ● परिवहन के लिये भारी

जल विद्युत

लाभ	हानि
● प्रदूषण मुक्त ● सिंचाई और मत्स्यन को बढ़ावा देती है ● सस्ती	● स्थानीय समुदाय का विस्थापन ● निम्न क्षेत्रों का जलप्लावन ● संयंत्र स्थापित करने में खर्चीला

अध्याय
12

जनांकिकीय व्यवस्था एवं नगरीकरण (Demographic System and Urbanization)

जनसंख्या के सांख्यिकीय और व्यवस्थित अध्ययन को 'जनांकिकीय' कहा जाता है। जनगणना से केवल स्थान विशेष में कुल कितने व्यक्ति रहते हैं, उसका पता चलता है, लेकिन जनांकिकीय के अध्ययन के आधार पर विभिन्न लैंगिक वर्गों, भौगोलिक क्षेत्रों तथा अन्य सभी तुलनात्मक क्षेत्रों में जनसंख्या को वर्गीकृत कर सकते हैं। जनांकिकीय व्यवस्था के आधार पर ही जनसंख्या के गुणात्मक स्तर का पता चलता है, साथ ही भविष्य के लिये नीति बनाने में भी मदद मिलती है।

12.1 भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ *(Characteristics of India's Demographic System)*

भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- अधिक जनसंख्या
- ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता
- उच्च जनसंख्या वृद्धि दर
- निम्न लिंगानुपात
- अधिक निर्भरता की स्थिति
- नृजातीय विविधता
- वृद्धि के परिणाम

अधिक जनसंख्या *(Excess population)*

- किसी देश की अनुकूलतम जनसंख्या उसे कहा जाता है, जो उसके अधिकतम या संपूर्ण संसाधनों का अधिक-से-अधिक दोहन कर सकने वाली न्यूनतम जनसंख्या हो।
- वैश्विक तुलनात्मक दृष्टि से भारत का क्षेत्रफल लगभग **2.4%** है, लेकिन यहाँ पर कई गुना अधिक जनसंख्या है।
- एक अनुमान के अनुसार 2025–50 के बीच भारत की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी, क्योंकि चीन की जनसंख्या वृद्धि दर 1% है, जबकि भारत की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.64% है।
- इस स्थिति में भारत की जनसंख्या 34 वर्षों में दोगुनी हो जाएगी, जबकि चीन की जनसंख्या 60 वर्षों में दोगुनी होगी।
- भारत में जनसंख्या अधिक होने के कारणों में मृत्यु-दर की तुलना में जन्म-दर का अधिक होना, कम उम्र में विवाह करने की सामाजिक मान्यता, धार्मिक अंधविश्वास, निरक्षरता की अधिकता, जनसंख्या नियंत्रण के लिये उपयुक्त वैज्ञानिक सुविधाओं का अभाव, पुत्र-प्राप्ति की प्रबल चाह आदि जैसी प्रमुख समस्याएँ हैं।

ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता *(Excess of rural population)*

- भारत में 2011 की जनगणना के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों की **आबादी 68.9%** है, जबकि 31.1% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है।
- नगरीय क्षेत्रों में कम-से-कम तीन-चौथाई लोग द्वितीयक या तृतीयक क्षेत्र पर निर्भर होते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग प्राथमिक क्षेत्रों पर निर्भर होते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पूंजी के अनुपात में लाभ की दर सबसे कम होती है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न रोज़गार सृजन करके विकास किया जा सकता है।

अध्याय
13

भारत की भाषाएँ, प्रजातियाँ एवं जनजातियाँ (Languages, Races and Tribes of India)

भारत में भाषाएँ/भाषायी संघटन *(Languages and their Composition in India)*

भारत एक भाषायी विविधता का क्षेत्र है। देश में 200 भाषाएँ और लगभग 544 बोलियाँ हैं जिसमें 97% जनसंख्या सिर्फ 23 भाषाएँ बोलती हैं। 22 भाषाएँ संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल हैं और अनेक भाषाएँ गैर-अनुसूचित हैं। अनुसूचित भाषाओं में हिंदी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। देश में भाषायी प्रदेशों की सीमाएँ सुनिश्चित और स्पष्ट नहीं हैं बल्कि उनका अपने-अपने सीमांत प्रदेशों में क्रमिक विलय और अध्यारोपण हो जाता है।

भाषाओं का भौगोलिक वितरण *(Geographical Distribution of Languages)*

उत्तर के विशाल मैदान में आर्य परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा है जो देश की बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली जाती है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश प्रमुख हिन्दी भाषी क्षेत्र हैं। द्रविड़ परिवार की भाषाएँ मुख्यत: प्रायद्वीपीय भारत में बोली जाती हैं जिसमें कन्नड़ भाषा का संबंध कर्नाटक से, तमिल भाषा का तमिलनाडु से, मलयालम का केरल से और तेलुगु का संबंध आंध्र प्रदेश से है। चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएँ एवं बोलियाँ मुख्यत: उत्तर-पूर्व की जनजातियों तथा उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम में स्थित हिमालयी एवं उपहिमालयी प्रदेश के लोगों द्वारा बोली जाती हैं। तिब्बती हिमालय शाखा की बोलियाँ लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम एवं भूटान में बोली जाती हैं। उर्दू भाषा का संकेंद्रण मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में है। उड़िया, बंगाली एवं असमिया मुख्यत: पूर्वी भारत में बोली जाती है। असम- म्याँमार शाखा की भाषाएँ एवं बोलियाँ भारत एवं म्याँमार के समीपवर्ती क्षेत्र में बोली जाती हैं। इसमें नागा भाषा नगालैंड में, लुशाई भाषा मिज़ो पहाड़ियों में, मेतेई भाषा मणिपुर में बोली जाती है। कच्छी एवं सिंधी बोलने वाले लोग मुख्यत: पश्चिमी भारत में निवास करते हैं।

भारत की प्रजातियाँ एवं जनजातियाँ *(Races and Tribes of India)*

- सामान्यत: 'प्रजाति' का अर्थ एक ऐसे विशेष मानव वर्ग से है, जिसमें वर्ग विशेष के सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना तथा बाह्य लक्षण जैसे-त्वचा का रंग, कद, सिर एवं नाक की बनावट, बालों की प्रकृति, आँखों की बनावट, होंठों की मोटाई तथा रक्त वर्ग आदि एक जैसे हों।
- जनजातीय लोग विभिन्न धार्मिक, भाषायी, नृजातीय समूहों से संबंध रखते हैं। इनकी जीवन शैली एवं व्यवसाय का प्रकृति से सीधा एवं घनिष्ठ संबंध होता है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से ये पिछड़े हुए होते हैं।
- सरल शब्दों में कहा जाए तो, जनजाति वह सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्व में था या जो अब भी राज्य की मुख्यधारा से अलग-थलग है। 'जनजाति' वास्तव में भारत के आदिवासियों के लिये इस्तेमाल होने वाला एक वैधानिक पद है।

भारत की प्रजातियाँ (Races of India)

- भूगोलवेत्ताओं का मानना है कि भारत में आने वाली सबसे पहली प्रजाति नीग्रो (नीग्रिटो) है, इसके बाद क्रमश: प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड एवं भूमध्यसागरीय प्रजातियों का आगमन हुआ तथा सबसे अंत में नार्डिक प्रजाति का आगमन हुआ।
- प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड एवं भूमध्यसागरीय प्रजातियों ने मिलकर हड़प्पा सभ्यता की शुरुआत की। प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर हड़प्पा काल में सामान्यत: 4 प्रकार की प्रजातियों का अस्तित्व था-
  - प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड
  - भूमध्यसागरीय
  - अल्पाइन
  - मंगोलॉयड

अध्याय
14

भारत में भूमि सुधार
(Land Reforms in India)

भूमि सुधार शब्द का प्रयोग संकुचित और विस्तृत दोनों ही अर्थों में किया जाता है। संकुचित अर्थ में भूमि सुधार से तात्पर्य मध्यस्थों को समाप्त कर काश्तकारों को भूमि पर स्वामित्व देना है। दूसरे शब्दों में, छोटे किसानों एवं खेतिहर मज़दूरों के हितों के अनुकूल भूमि के वितरण से है। इसका संबंध भूमि स्वामित्व के पुनर्वितरण से है। विस्तृत अर्थों में कृषि प्रणाली व क्रियाओं के संबंध में किये गए किसी उपाय को, जिससे कार्यक्षमता बढ़ती है, भूमि सुधार कहा जाता है। भूमि सुधार के अंतर्गत मध्यस्थों की समाप्ति, काश्तकारी विधान में संशोधन, न्यायोचित लगान निर्धारण, जोतों की उच्चतम सीमा निर्धारण, चकबंदी, सहकारी खेती आदि को शामिल किया जाता है।

यदि इसे हम भारत के संदर्भ में देखें तो भारत में भूमि सुधार कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- बड़े भू-स्वामियों से अतिरिक्त भूमि प्राप्त कर इसे भूमिहीनों में वितरित करना।
- चकबंदी और जोतों पर अधिकतम तथा न्यूनतम सीमा लागू करके आर्थिक जोतों (Economic Holding) की स्थापना करना ताकि श्रम तथा पूंजी का अपव्यय न करके भूमि का अपेक्षाकृत अधिक युक्तिपूर्ण प्रयोग किया जा सके।
- काश्तकारों में भूमि का पुनर्वितरण करना और पट्टे पर दी गई भूमि की शर्तों में सुधार करना है ताकि किसानों का शोषण समाप्त किया जा सके।
- भू-धारण अधिकार की सुरक्षा और लगान के नियमन द्वारा ऐसा वातावरण तैयार करना, जिसमें कृषकों को अपने श्रम का फल मिलने की आशा हो।
- लगान नियत करना तथा स्वामित्वाधिकार प्रदान करना।
- जनजातियों के हितों की रक्षा करना और गैर-जनजातियों को जनजातीय भूमि हथियाने से रोकना।
- बिचौलियों को हटाकर कृषकों और राज्य के बीच सीधा संबंध स्थापित करना।

14.1 भारत में भूमि सुधारों की आवश्यकता एवं महत्त्व
(Necessity and Importance of Land Reforms in India)

ब्रिटिश शासन द्वारा भारत पर लादी गई दोषपूर्ण भूमि व्यवस्था के कारण भारतीय गाँवों में कानूनी, आर्थिक और सामाजिक संबंधों की एक ऐसी व्यवस्था बन गई थी जिससे कृषि में आधुनिकीकरण नहीं हो सका। किसानों को निवेश करने के लिये कोई प्रेरणा नहीं थी। किसानों की दिलचस्पी जोतों के उपविभाजन और अपखंडन को रोकने में भी नहीं रही। इन सब कारकों ने सामूहिक रूप से इस प्रकार कार्य किया कि कृषि में स्थायी रूप से गतिहीनता पैदा हो गई और दीर्घकाल तक उत्पादन में कोई सुधार नहीं हुआ। इसी पृष्ठभूमि में भारत में भूमि सुधार की आवश्यकता महसूस की गई।

भारत में भूमि सुधारों की आवश्यकता एवं महत्त्व को निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है-

- **कृषि के विकास के लिये:** भूमि सुधारों का कृषि विकास में इस दृष्टि से महत्त्व है कि जब भी कृषि संबंधों के मध्यस्थ या बिचौलियों को हटाकर काश्तकार को भूमि का स्वामित्व दे दिया जाता है तो कृषि भूमि पर स्थायी सुधार के लिये अनुकूल स्थिति बनती है। काश्तकार भूमि पर निवेश करने के लिये तैयार होता है जिससे उत्पादकता बढ़ती है। कृषि उत्पादकता में वृद्धि जहाँ एक ओर काश्तकार के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक होती है, वहीं इससे कृषि क्षेत्र में आर्थिक आधिक्य (Economic Surplus) में भी वृद्धि होती है, जिसके निवेश द्वारा कृषि विकास की संभावनाएँ बढ़ती हैं।
- **सामाजिक न्याय के लिये:** भूमि सुधार सामाजिक न्याय की दृष्टि से भी आवश्यक होता है। सामंती उत्पादन संबंधों (Feudal Relation of Production) पर आधारित सामाजिक ढाँचा अन्यायपूर्ण होता है। इसमें भूमि पर थोड़े से ज़मींदारों का अधिकार होता है। किसान अपनी जीविका के लिये ज़मींदारों पर निर्भर होते हैं। इस व्यवस्था में आर्थिक और राजनीतिक

अध्याय
15

भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाएँ (Indian State and it's Terrestrial Borders)

भारत एक विशाल देश है। इसका क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी. है जो विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 2.4% है। भारत विश्व का सातवाँ सर्वाधिक बड़ा देश है। भारत विभिन्न भौतिक स्वरूपों में बँटा हुआ है– पर्वत, पठार, मैदान, झीलें इत्यादि भारत के विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं। कर्क रेखा भारत के ठीक मध्य से होकर गुज़रती है। भारत के संपूर्ण क्षेत्रफल का 10.7% भू-भाग पर्वतीय, 18.6% भू-भाग पहाड़ी, 27.7% भू-भाग पठारी एवं 43% भू-भाग मैदानी है।

15.1 भौगोलिक अवस्थिति *(Geographical Location)*

- भारत का कुल क्षेत्रफल लगभग 32,87,263 वर्ग किमी. है जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.4% है।
- भारत की आकृति लगभग चतुष्कोणीय है। इसका उत्तर-दक्षिण में अधिकतम विस्तार **3,214 किमी.** तथा पूर्व-पश्चिम में अधिकतम विस्तार **2,933 किमी.** है।
- मुख्य भूमि, **अंडमान-निकोबार** द्वीप समूह तथा **लक्षद्वीप समूह सहित** भारत की तट रेखा की कुल लंबाई लगभग **7,516.6 किमी.** है।
- भारत की स्थलीय सीमा की लंबाई 15106.7 किमी. (अन्य स्रोतों में 15,200 किमी.) है।
- भारत पूरी तरह से उत्तर-पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है। यह 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 68°7' पूर्वी देशांतर से 97°25' पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है।
- भारत की मुख्य भूमि उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैली हुई है।
- भारत के उत्तर-पश्चिम, उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर नवीनतम मोड़दार पर्वतों का विस्तार पाया जाता है, जबकि दक्षिण में प्रायद्वीपीय क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है। भारत का प्रायद्वीपीय भू-भाग उत्तर में अधिक चौड़ा तथा 22° उत्तरी अक्षांश से दक्षिण की ओर सँकरा होता गया है।
- हिमालय पर्वतमाला द्वारा भारतीय प्रायद्वीप की मुख्य भूमि को एशिया से अलग किया जाता है। भारत पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा हुआ है।
- भारत की मुख्य भूमि से दूर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में स्थित दक्षिणतम बिंदु **इंदिरा पॉइंट** अथवा **पिगमेलियन पॉइंट** (ग्रेट निकोबार द्वीप) तथा भारत का सबसे उत्तरी बिंदु 'इंदिरा कॉल' (जम्मू-कश्मीर) है। भारत का सबसे पूर्वी बिंदु 'किबीथु' अंजा ज़िले में (अरुणाचल प्रदेश) तथा पश्चिमी बिंदु **गुहार मोती** (कच्छ ज़िला, गुजरात) है।
- भारत में कुल 29 राज्य तथा 7 केंद्रशासित प्रदेश हैं, जिन्हें मुख्य रूप में 6 अंचलों (Zones) में बाँटा गया है–

अंचल	सम्मिलित राज्य/केंद्रशासित प्रदेश
पूर्वी अंचल (East Zone)	बिहार, **ओडिशा**, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल
पश्चिमी अंचल (West Zone)	**राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन** एवं **दीव** तथा दादरा एवं नागर हवेली
उत्तरी अंचल (North Zone)	जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा चंडीगढ़
दक्षिणी अंचल (South Zone)	**आंध्र प्रदेश**, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना, लक्षद्वीप, **अंडमान एवं निकोबार** द्वीप समूह तथा पुदुच्चेरी
मध्यवर्ती अंचल (Central Zone)	मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़
पूर्वोत्तर अंचल (North–East Zone)	**असम**, सिक्किम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मिज़ोरम, नगालैंड तथा **अरुणाचल प्रदेश**

अध्याय
16

भारत के सामुद्रिक संसाधन एवं उनकी संभाव्यता (Marine Resources of India and their Feasibility)

भौगोलिक वितरण की दृष्टि से संसाधनों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। महाद्वीपीय संसाधन एवं महासागरीय संसाधन। पृथ्वी के स्थल खंड पर पाया जाने वाला संसाधन महाद्वीपीय संसाधन कहलाता है। यही संसाधन आधुनिक विकास एवं औद्योगिक क्रांति का आधार रहा है लेकिन पिछले 300 वर्षों में महाद्वीपीय संसाधनों के तीव्र दोहन के परिणामस्वरूप उसके समापन का संकट उत्पन्न हो गया है। अत: विकास की तीव्र रफ्तार को बनाये रखने तथा विश्व समुदाय के जीवन स्तर को उन्नत करने के लिये वैकल्पिक संसाधनों की खोज ज़रूरी हो गई है। महासागर, जो कि हमारे पृथ्वी के लगभग 71% भाग पर फैला हुआ है, की ओर अब सबकी निगाहें लगी हुई हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद महासागरों के संसाधनों का दोहन एवं विकास तीव्र गति से प्रारंभ हो चुका है। महासागरीय संसाधनों के दोहन ने विभिन्न देशों के बीच तनाव भी उत्पन्न करना प्रारंभ किया। अत: 1982 ई. में संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्त्वावधान में अंतराष्ट्रीय समुद्री कानून की घोषणा की गई जिसके अंतर्गत कोई भी देश अपने तट रेखा से 320 किमी. (200 नॉटिकल मील) की दूरी तक के क्षेत्र का राष्ट्रीय समुद्री संसाधन के रूप में दोहन एवं विकास कर सकता है। अगर दो देशों के बीच समुद्री क्षेत्र 320 किमी. से भी कम है तो उस क्षेत्र के बीच की विभाजक रेखा सीमा रेखा होगी। 320 किमी. से आगे समुद्री संसाधन को अंतर्राष्ट्रीय संसाधन माना गया है। उस क्षेत्र का उपयोग केवल परिवहन एवं अनुसंधान कार्य हेतु किया जा सकता है।

समुद्र हमारी पृथ्वी के जीवीय पर्यावरण का सबसे बड़ा घटक है। समुद्री जल में अनेक प्रकार के पौधे एवं जीव पनपते हैं जिनका जैविक व अजैविक संसाधनों में वर्गीकरण किया जा सकता है। इन संसाधनों की सबसे बड़ी विशेषता इनका नवीकरणीय होना है। पादप प्लवक (Phytoplankton), प्राणी प्लवक (Zooplankton), नितलस्य प्राणी (Bentnic animals) तथा मत्स्य आदि प्रमुख जैविक संसाधन हैं तथा अजैविक संसाधनों में समुद्री खनिज संसाधन प्रमुख है।

वर्तमान समय में विश्व की बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्य पदार्थों एवं खनिजों की बढ़ती मांग के कारण इन संसाधनों का महत्त्व अधिक बढ़ गया है। वर्तमान में सागरीय संसाधन के विदोहन के अलावा मनुष्य अपने कौशल एवं प्रौद्योगिकीय विकास के द्वारा उसमें संशोधन एवं परिमार्जन भी कर रहा है, जैसे- सागर कृषि, जलकृषि, सागर जंतुवर्द्धन आदि। सागरों का सामरिक महत्त्व भी अधिक है। इस संदर्भ में क्षेत्रीय सागरों, आंतरिक जल, विशिष्ट आर्थिक मंडल (EEZ) आदि क्षेत्रों में खनिजों की खोज तथा विदोहन हेतु अध्ययन जोर पकड़ता जा रहा है, जिसके लिये सागर भौमिकी का विकास किया गया है।

16.1 सागरीय संसाधनों का वर्गीकरण *(Classification of Marine Resources)*

सागरीय संसाधन जैविक एवं अजैविक रूप में होते हैं। नदियाँ स्थलीय भागों से बहाकर अनेक प्रकार के पदार्थों को सागर में पहुँचाती रहती हैं तथा संसाधनों का नवीनीकरण होता रहता है। सागरीय संसाधनों में जंतु, पौधों के साथ खनिज तत्त्वों के अलावा अनेक प्रकार की औषधियाँ एवं विटामिन युक्त खाद्य संसाधन भी सम्मिलित हैं।

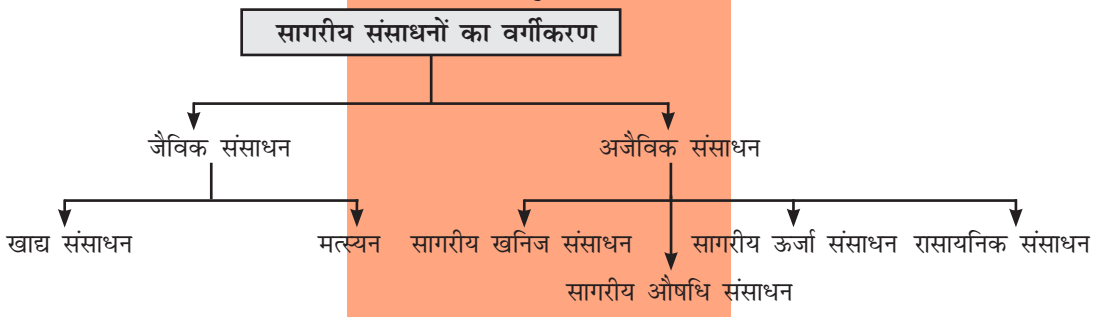

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456